आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" अप्रैल 2024

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 24
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

। वर्ष –25 । अंक–04 । चैत्र – बैशाख मास । अप्रैल 2024

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

आज रामनवमी है।
हर साल चैत्र माह में शुक्ल पक्ष की नवमी को रामजन्म का यह शुभ दिन आता है ।
देशभर में रामनवमी का पर्व हर्षोउल्लास के साथ मनाया जा रहा है।
आप अपने घर पर भी भक्ति भाव से भगवान राम की पूजा-उपासना कर रहे होंगे।
आप को रेखा गैस एजेंसी की तरफ से रामनवमी की शुभकामनाएं।
सत्यवचनी, कल्याणकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के मूल्यों का हम दिल से पालन करतें हैं और ग्राहकों की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।
आप के घर आंगन में श्रीराम के आशीर्वाद से खुशियाँ और समृद्धि रहें
इस कामना के साथ कहते है, सियावर रामचंद्र की जय!

रेखा गॅस एजन्सी

द.नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001 फोन : (0257) 2221095,
2221195, 2225195, 2228495. | rekhagas20032003@rediffmail.com

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से अपनी बात	4
संपादकीय	5
सहयोग के लिए आभार तथा निवेदन	6
रंग रंगीली होली	8
महाशिवरात्रि पर्व के बारे में 10 रोचक तथ्य	11
चैत्र नवरात्रि हिंदुओं का एक प्रमुख त्योहार	12
जीवन में षोडश (सोलह) संस्कार का महत्व	13
हिन्दी बोलने का प्रयास करें...	16
नव वर्ष - महत्त्वपूर्ण जानकारी	18
शाखा समाचार	20
समाज समाचार	22
बिछड़े स्वजन	22

अंक 04
अप्रैल 2024, वर्ष - 25

सभापति
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक
श्री दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
श्रीमती चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com
वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED
10292296@cbin
BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका
वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

।। अपनों से अपनी बात।।

● उषा चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

कुलदेवी महाविद्या एवं देवी चर्चिका को नमन।
सम्मानीय। बंधुवर एवं भगिनी
पालागन
दिमाग से बनाए गए रिश्ते,
बाजार तक चलते हैं।
दिल से बनाए गए रिश्ते,
आखिरी सांस तक चलते है

होली का रंगारंग त्यौहार आनंद और उत्साह के साथ मनाया होगा। फाग और रसिया की गायिकी आनंद को दुगणित कर देती है।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की शाखा सभाओं के द्वारा होली मिलन के कार्यक्रम आयोजित किया जा रहे हैं जो हमारे समाज की एकता और भाईचारे के प्रतीक है। यही कार्यक्रम हमारी होली गायन की परंपरा को सुदृढता प्रदान कर रहे हैं।

निर्वाचन की प्रक्रिया के मध्य हमारे बहुत से बंधु और भगिनियो
ने श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की आजीवन सदस्यता ग्रहण की थी।

सदस्यता की राशि महासभा के पास सुरक्षित है। महासभा की सदस्यता का फॉर्म शीघ्र ही चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित होगा। सदस्यता का यह फॉर्म हमारे सभी सदस्यों को पूर्ण रूपेण भरकर माथुर चतुर्वेदी महासभा के कार्यालय को प्रेषित करना होगा ताकि आपकी सदस्यता क्रमांक आपको प्रदान की जा सके। साथ ही श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की शाखा सभाओं के अध्यक्षों से सादर आग्रह है कि वह महासभा की सम्बद्धता हेतु शीघ्र ही आवेदन प्रस्तुत करें ताकि यह कार्य शीघ्रता से पूर्ण किया जा सके। जिन नगरों अथवा शहरों में शाखा सभाएं गठित नहीं है वहां के सभी सम्माननीयों से आग्रह है कि वह शाखा सभा गठित करने के लिए आगे आए और शाखा सभा गठित कर श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा को सृदृढ़ता प्रदान करें।

निर्वाचन में प्रवास के समय ऐसे कई नगरों और शहरों में पहुंचना हुआ था जहाँ शाखा सभा गठित नहीं थी। हम लोगों का प्रयास रहे वहां सर्वसम्मत से चुनावी प्रक्रिया संपन्न हो।

गुरुग्राम हैदराबाद गाजियाबाद मैं शाखा सभाएं गठित हुई। नवनिर्वाचित अध्यक्षों को बधाई शुभकामनाएं। गुरुग्राम ने महिला सशक्तिकरण में एक कदम और आगे बढ़ाया है वहाँ हमारी एक बहन को सर्वसम्मत से अध्यक्ष बनाया गया।

गुडी परेवा तथा चैत्री नवरात्रि की बधाई। नव वर्ष की शुभकामनाएं।

महासभा को आर्थिक सहयोग देकर स्वावलंबी बनाएं।

हमारे स्वजन जो हमसे बिछड़ गए। उनको विनम्र श्रद्धांजलि।

जय समाज जय संगठन

संपादकीय

माहौल में व्याप्त उमंग व उल्लास तथा जोश और उत्साह से परिपूर्ण फागुन माह की समाप्ति के बाद मां नवदुर्गा के आराधना व उपासना का पर्व इस माह आ गया है। सभी लोग मातृशक्ति के आराधना में मग्न है। इस समय माता की आराधना व शक्ति पर्व के सभी उपवास बड़े मुश्किल व कठिन होते हैं।

आगरा सभा द्वारा अब मार्च माह में आगरा में यज्ञोपवीत संस्कार का आयोजन किया जा रहा था, जो अपरिहार्य कारणों से आगामी सूचना तक निलंबित कर दिया गया है। नई तारीख आने पर आपको सूचित किया जाएगा।

महासभा के नए सत्र के सत्र का गठन किया जा रहा है। इसमें नई सभाओं का इस सत्र के लिए संबद्धता का नवीनीकरण किया जा रहा है। जिसके लिए फार्म भी प्रकाशित किया जा रहा है। अतः संबंधता का नवीनीकरण के लिए फॉर्म भरकर आवश्यक शुल्क जमा कर महासभा की संबद्धता लें। जिससे आगामी समाचार प्रकाशन में सहायता प्राप्त होगी। शीघ्र ही नई सदस्यता हेतु फॉर्म पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। नई सदस्यता हेतु सूचना का प्रकाशन भी पत्रिका में किया जाएगा। इस हेतु संपूर्ण जानकारी आपको प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराई जाएगी।

गुरुग्राम पर गाजियाबाद के समाज के होली मिलन में सहभागिता का अवसर प्राप्त हुआ दोनों जगह बहुत ही प्रेमपूर्वकव व भव्यता से स्वागत किया गया।

गुड़गांव सभा द्वारा अतिथियों को प्रेम के साथ प्रेम पूर्वक शाल, श्रीफल के साथ तुलसी कृत रामायण भी भेंट की गई। इसी सम्मान कार्यक्रम में आगरा सभा के अध्यक्ष श्री मुकेश जी द्वारा आगरा सभा नामित उत्तरी भेंटकर सम्मानित किया गया। इस क्रम में श्री भरतचंद जी, भोपाल सभापति श्रीमती उषा जी भोपाल श्री मुनीन्द्र नाथ जी चतुर्वेदी (नोएडा) और गुड़गांव सभा के पूर्व अध्यक्षों के साथ,आगरा सभा के अध्यक्ष मुकेश जी के साथ मंच पर मेरा भी सम्मान किया गया।

इसी क्रम में गाजियाबाद सभा द्वारा महासभा की सभापति श्रीमती उषा चतुर्वेदी, महासभा के संरक्षक श्री भरत चतुर्वेदी के साथ मेरा भी शाल श्रीफल से सम्मान किया गया।

– शशांक चतुर्वेदी

सहयोग के लिए आभार तथा निवेदन

दिनाँक 19.03 .2024

अन्नपूर्णा सहायता हेतु प्राप्त सहयोग राशि

सजातीय बान्धवों को एक सांकेतिक सहयोग राशि रु २४००० वार्षिक (रु २०००/ – प्रति माह के हिसाब से) श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा समाजहित के लिए बांधवों के अमूल्य सहयोग से अन्नपूर्णा एवं छात्रवृत्ति सहायता प्रदान की जा रही है।

वर्तमान में 42 परिवारों को यह सहायता त्रैमासिक जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर के प्रथम सप्ताह सीधे उनके बैंक खाते हस्तांतरित की जा रही है। आप सभी से इस पुण्य कार्य में सहयोग के लिए सादर आग्रह है। आपसे अनुरोध है स्वेच्छा अनुसार किसी भी राशि का सहयोग करने की कृपा करें।

निम्नांकित सम्मानित बान्धवों ने अन्नपूर्णा सहायता राशि मैं वित्तीय वर्ष 2023 – 24 में अपना अमूल्य योगदान किया है :–

१. श्री जयंत चतुर्वेदी (लखनऊ) –Rs 12,000/–

२. आनंद सिंह चतुर्वेदी परिवार , होलीपुरा की ओर से श्री भरत चतुर्वेदी (रिसरा) द्वारा – Rs .24000/–

३. श्री बी न चतुर्वेदी एवं श्रीमती संतोष चतुर्वेदी (नोएडा) – विवाह की ६०वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य मैं – Rs .5100/–

४. श्री अविनाश जी चतुर्वेदी (होलीपुरा / कानपुर) – 12000/–

५. श्री जगदीश प्रसाद जी चतुर्वेदी (भोपाल)– Rs. 5100/–

६. श्री अनुज चतुर्वेदी (बिजकोली / दिल्ली) द्वारा पिताश्री स्व राकेश जी के जन्मदिन की स्मृति मैं – Rs.12000/–

७, विवाह की वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में श्री मुरलीधर चतुर्वेदी (चन्द्रपुर/मथुरा) द्वारा

Rs.5151 /–

८, श्री स्वयंभू चतुर्वेदी (बंगलौर) द्वारा Rs.24,000/–

९,. श्री प्रभाकर चतुर्वेदी (गोविंदपुरा / जयपुर) द्वारा Rs.24,000/–

१०. श्रीमती आरती एवं wing commander श्री अनिरुद्ध चतुर्वेदी (इटावा / लखनऊ) – Rs.12,000/–

११.अपने ६२ वें जन्मदिन के उपलक्ष्य सुश्री ममता चतुर्वेदी (कोटा) Rs . 2100/–

१२. श्री पुरुषोत्तम चतुर्वेदी (भोपाल) Rs 5000/–

१३. श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी (आगरा) – Rs 2100/–

14. श्री अनुज चतुर्वेदी, गाज़ियाबाद –12000/–

15. श्री माथुर चतुर्वेदी सभा, आगरा (रजि.) – 11000/–

16. प्राची चतुर्वेदी पुत्री श्री भानु प्रकाश चतुर्वेदी कोटा के जन्मदिन के अवसर पर 2100/–

17. श्री सुब्रत चतुर्वेदी (नोएडा) – Rs 25,000/–

18. डॉ राकेश चतुर्वेदी (मथुरा) Rs 11000/–

19, स्व विजय चतुर्वेदी,योगी जी सुपुत्र स्व नरेशचंद्र जी (होली पुरा/कोलकाता) की स्मृति में श्री मदन चतुर्वेदी, संरक्षक महासभा द्वारा रु 24000/–

20. डॉ प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली) Rs 12,000/ – 21. श्री सावन चतुर्वेदी (आगरा) – Rs. 2100/–

22. श्री भुवन चतुर्वेदी (मैनपुरी / गुड़गाँव) पिता श्री की पुण्य तिथि पर 12000/–

23. श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी (गतिकी/ ग़ाज़ियाबाद) – Rs 11000/–

24. श्री ऋषभ चतुर्वेदी (कमतरी/ देहरादून) ने अपने सुपुत्र श्रीं शलभ जी , के एक प्रसिद्ध कंपनी (MNC) में महा प्रबंधक के पद पर पदोन्नति के उपलक्ष्य में – Rs 11,000/–

25. अपने पिता श्री दया शंकर जी (होलीपुरा / कानपुर) की पुण्य तिथि की स्मृति में श्री राजीव जी संजीव जी एवं समस्त कक्का परिवार द्वारा – Rs 24,000/–

26. अपनी पत्नी स्वर्गीय श्रीमती शीला जी की स्मृति मैं श्री कृष्ण कान्त जी (होलीपुरा / लखनऊ) द्वारा

Rs 12,000/–

27 .स्व. हेमचंद जी (पुरा/भोपाल) की स्मृति में डॉ. दिवाकर नाथ चतुर्वेदी द्वारा Rs 12,000/–।

28. गुप्त दान – Rs.12,000/–

29. स्व. श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी (कछपुरा/भोपाल) की प्रथम पुण्यतिथि (09/11/23) के अवसर पर श्रीमती शारदा चतुर्वेदी द्वारा 5000/–

30. डॉ राजेंद्र प्रसाद चतुर्वेदी जयपुर द्वारा अपने पूज्य पिताजी

श्री रेवती रमण जी चतुर्वेदी (पूर्व अध्यक्ष कोटा शाखा सभा)की पुण्य स्मृति में – Rs. 24,000/–

31. श्री सुमन्त चतुर्वेदी (आगरा/ मुंबई) द्वारा अपने पिता श्री स्व नरेश चंद्र जी तथा माता श्रीमती हीरा देवी की स्मृति मैं Rs. 5001/–

32 . Rs 12000/– बाबू ओंकार नाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/कानपुर) की स्मृति मैं , Rs 12,000/– श्री प्रभात चंद्र जी (इटावा) तथा Rs 12,000 /– श्री सतीश चंद्र जी की स्मृति मैं श्री विकास चतुर्वेदी @ चुनना के माध्यम से

34 . श्री विवेक चतुर्वेदी (अध्यक्ष, मुंबई समुदाय) – श्रीमती शेफाली चतुर्वेदी ने बेटी डॉ. श्रुति चतुर्वेदी (एमएस जनरल सर्जरी) किंग्स एडवर्ड मेडिकल हॉस्पिटल, मुंबई सुपर स्पेशलिटी कोर्स इन प्लास्टिक सर्जरी के लिए एन.ई.ई.टी, एस.एस. एग्जाम 2023 द्वारा चयन होने के अवसर पर Rs. 42000/–

35. श्री प्रसन्न चातुर्वेदी उज्जैन Rs. 24,000/–

36. Lt Gen श्री विष्णु कांत जी चतुर्वेदी (फ़तहगढ़/ नोएडा) अपने पुत्र चि वरुण के विवाह की वर्ष गाँठ के उपलक्ष्य मैं Rs 12,000/–

37., श्री गोपाल कृष्ण चतुर्वेदी (मैनपुरी / नोएडा) पोत्र चि असीम के जन्म दिन के उपलक्ष्य मैं – Rs 12,000/–

38 .माताश्रीं स्वर्गीय सुनीता चतुर्वेदी (मैनपुरी) की पुण्य तिथि की स्मृति , श्री अनुराग चतुर्वेदी (पुत्र श्री सुरेश चन्द्र चतुर्वेदी व पौत्र स्वर्गीय श्री छक्कन लाल चतुर्वेदी) द्वारा 12000/–

39 . Wg Cdr . अक्षत चतुर्वेदी @आशु (आगरा) Rs 12000/–

40 . श्री शिव जी चतुर्वेदी (कोटा) ने अपने पुत्र स्व उमेश चंद्र जी की चतुर्थ पुण्यतिथि (27.12.2023) की स्मृति के उपलक्ष्य मैं – Rs. 6000/–

41. श्रीमती गौरी चतुर्वेदी (चन्द्रपुर / लखनऊ) द्वारा अपने पोत्र चि अनमोल (सुपुत्र श्री अनुपम एवं श्रीमती शिल्पी) के B Tech MBA के बाद डिलोइट company गुरुग्राम में नियुक्ति के उपलक्ष्य मैं – Rs. 12000//

42. श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद) मकर संक्रांति के उपलक्ष्य मैं – Rs 5100/–

43. राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के पुण्य पर्व के अवसर पर मुरलीधर बप्पू परिवार (कठावाले – होलीपुरा – मुनीन्द्र नाथ (नोइडा) , मोनिका – तुषार (लन्दन), चि दिव्यांशु एवं सौ ईशा , चि निशांत एवं सौ. अर्चना (लन्दन) तथा अंशुमान (दिल्ली) की और से– Rs 35,000/–

44. श्री सुब्रत चतुर्वेदी (नोएडा) – Rs 25,000/–

45. col सुधीर चतुर्वेदी (होलीपुरा/ मुंबई) द्वारा Rs .12000/–

46. अपनी माता श्री। की २५वीं पुण्य तिथि की स्मृति मैं श्री चंद्र कांत चतुर्वेदी (पूरा / हैदराबाद) द्वारा Rs 2000/–

47. अपनें विवाह की ५३ वीं वर्षा गाँठ के उपलक्ष्य मैं श्री महेश चंद्र जी (बिजकोली / दिल्ली) द्वारा –Rs 5100/–48. पिताश्री भुवनेश्वर् प्रसाद जी तथा माता श्री श्रीमती सुधा जी की पुण्य स्मृति मैं अनुपमा चतुर्वेदी(बेटी) ,राहुल चतुर्वेदी एवम सलिल चतुर्वेदी(बेटे) न द्वारा Rs. 24,000/–

कुल प्राप्ति सहयोग राशि
– ₹6,47,952/–
सहयोग के लिए सभी का पुनः सादर आभार*
वित्तीय वर्ष 2023–24 में अब तक बैंक मैं सीधे स्थांतरित छात्र वृति सहायता राशि Rs . 87,100/–
वित्तीय वर्ष2023–24 में आनपूर्णा योजना मैं अभी तक कुल सीधे खाते मैं स्थांतरित राशि Rs.9,53,000/–
अब तक हस्तांतरित कुल सहायता राशि (अन्नपूर्णा तथा छात्रवृत्ति) –
*Rs. 10, 40, 100/–

सभी से निवेदन है कि इस Rs 4 लाख से ज़्यादा के अंतर को पूरा करने मैं सहयोग करने की खुले हृदय से कृपा करें।– सभी लाभार्थी समाज से सहयोग के लिए अपेक्षा रखते है।

समाज के लिए सहयोग देने वाले सभी को विनम्रतापूर्वक आभार

सहयोग राशि भेजने के लिए :–
महासभा खाता विवरणः
Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha
Saving A/C no.1006238340
ifs code– cbin0283533
Central bank of india
Branch– Anand vihar delhi

*सहायतार्थ राशि के हस्तांतरण की सूचना के साथ ई–मेल आई डी तथा दूरभाष की जानकारी देने की भी कृपा करें।

मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, कार्यवाहक मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Mob. 9871170559

रंग रंगीली होली

- चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

"मेरा मनमोहना बंशी वाला

ऐसी मार गया पिचकारी, भींज गयी साड़ी, दूर भया ठाड़ा।"

होली का त्यौहार वैसे तो हिन्दुओं का त्यौहार माना जाता है, परन्तु इसे सभी धर्म एवं संपद्राय के लोग उल्लास एवं प्रेमपूर्वक मनाते हैं। होली को रंगोत्सव के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन सभी लोग आपसी गिले-शिकवे भूलकर एक-दूसरे को रंग, अबीर और गुलाल लगाते हैं। मिठाईयां आपस में बांटते और खिलाते हैं। होली को प्रकृति और प्रेम का पर्व भी माना जाता है। होली के त्यौहार को राष्ट्रीय त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। इस दिन स्कूल, कॉलेज, आफिस सभी की छुट्टी रहती है, ताकि लोग अपने परिवार और इष्ट-मित्रों के साथ इस रंग-बिरंगे त्यौहार को मना सकें। होली ही एकमात्र ऐसा त्यौहार है, जिसमें लोग आपसी दुश्मनी भुलाकर एक-दूसरे के गले लग जाते हैं और रंग लगाते हैं। इस त्यौहार को अक्सर मार्च महीने में मनाया जाता है। होली के पीछे राजा हिरण्यकश्यप और भक्त प्रहलाद की कथा बहुत प्रचलित है।

यह पर्व फाल्गुन की पूर्णिमा से प्रारंभ होता है। फाल्गुन की पूर्णिमा की रात होली जलायी जाती है और अगली सुबह यानि चैत्र मास की पड़िवा की सुबह खेली जाती है। पहले के लोग प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करते थे। अतः इस त्यौहार को प्रकृति के करीब माना जाता है। इन प्राकृतिक रंगों में टेसू के फूलों का रंग सर्वोत्तम माना जाता था।

होली का त्यौहार बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाया

जाता है। इस त्यौहार में बच्चे, बूढ़े और जवान सभी उम्र के लोग पानी के रंग और सूखे रंग लगा कर होली खेलते है। लोग ढोल और ताशे बजाते हैं। टोलियों में घूम-घूम कर रंग डालते हुए नाचते गाते हैं। इस त्यौहार का पहला दिन जिस रात होली जलाते हैं, उसे होलिका दहन भी कहते हैं। दूसरा रंग खेलने वाले दिन को धुर खेल धुलेंडी, धुरड्डी और धूरिवंदन के नाम से भी जाना जाता है।

मिठाइयां तो होली की विशेषता है। होली की मिठाइयों में गुझिया का बहुत महत्व है। इस त्यौहार पर घरों में गुझिया, गुलाब-जामुन, लड्डू, बर्फी आदि बनाए जाते हैं। नमकीन का तो क्या कहना - सेंव, मठरी, साकें, चाकोली आदि प्रायः हर घर में तैयार पाया जाता है।

गुझियों के साथ अधिकांश प्रांतों में भांग-ठंडई का रिवाज भी देखा गया है। मावा गुझिया की तो बात ही निराली है। ठंडई वह पेय है, जो सर्दियों के जाने और गर्मियों के आने के बीच स्वादिष्ट और पौष्टिक आहार माना गया है, लेकिन होली परंपरा में इसका सीधा संबंध भांग के साथ रहा है। होली के कई रंग हैं। होलिका दहन से इस त्यौहार की शुरुआत होती है। अगले दिन रंग खेलने वाली धुलेंडी मनाई जाती है। इसके बाद भाईदूज का पर्व मनाया जाता है और एक दिन बाद रंग पंचमी त्यौहार मनाया जाता है। तब जाकर यह होली पर्व समाप्त होता है। होली ही एक ऐसा त्यौहार है, जिसमें लोग अनजाने लोगों के साथ भी रंग खेलते हैं और मुख मीठा कराते हैं और उन्हें भांग ठंडाई प्रस्तुत करते हैं।

यह त्यौहार हमारे देश के लगभग हर प्रांत में मनाया जाता है।

राजस्थान की होली

राजस्थान में होली का अलग ही रंग रहता है। हर जगह के अलग तरीके और अलग रीति-रिवाज।

राजस्थान के मरुधरा में होली के कई रूप देखने को मिलते हैं। यहां प्रदेश के अलग-अलग इलाकों में रंगों के साथ-साथ फूलों से, कोड़ों से और कंकरों से भांति-भांति की होली खेली जाती है।

करौली और भरतपुर, मथुरा से लगे होने के कारण यहां के लोग लट्ठमार होली का लुत्फ उठाते हैं। पुरुष महिलाओं पर रंग बरसाते हैं तो राधा रूपी महिलाएं पुरुषों पर लाठियों से वार करती हैं। उनसे बचते हुए पुरुषों को महिलाओं पर रंग डालना होता है। जयपुर के आदिदेव गोविंददेव जी के मंदिर में भी होली का त्यौहार बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। यहां ब्रज की तर्ज पर लाल पीली पंखुड़ियों से होली खेली जाती है। यहां भी गीत-संगीत और नृत्य का मनभावन समागम देखने को मिलता है। मन अनायास गा उठता है -

चंग धीरो रे बजावन हारा, अमर रहे यारी जोड़ी, चंग धीरो रे।

गुजरात की होली - यहां की होली की परंपरा में छाछ से भरे मिट्टी के बर्तन का टूटना है। यहां छाछ का बर्तन ऊपर रस्सी पर बांधा जाता है और उस तक पहुंचने के लिए लोग मानव पिरामिड बनाते हैं। कुछ लोग इस पिरामिड पर बाल्टियों से रंग फेंकते हैं। छाछ बर्तन को तोड़ने के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धाएं भी होती हैं। विजेता टीम को पुरुस्कार भी दिया जाता है।

हर गली मुहल्ले में होली गीतों की आवाज गुंजायमान होती रहती है -

"उड़े उड़े रे अबीर गुलाल रे, आ होली रमियो आज रे।।"

बंगाल की होली

बंगाल में होली के पर्व को दोल के अलावा वसंतोत्सव और दोल पूर्णिमा भी कहते हैं। हिंदी भाषियों की होली से ठीक एक दिन पहले बंगाल में दोल उत्सव होता है। दोल के एक दिन पहले होली दहन की परंपरा निभाई जाती है। जिसे बंगाल में "नेड़ा-पोड़ा" कहते हैं। बंगाल के कुछ जिलों में होलिका दहन को "चांचल" भी कहते हैं। दोल पूर्णिमा के दिन ही गंगा के नजदीक ही महाप्रभु चैतन्य का अविर्भाव हुआ था। इसलिए इस दिन को गौर पूर्णिमा भी कहते हैं। यहां ढोल मंजीरे के साथ ही भजन-कीर्तन करते हुए लोग इस त्यौहार को मनाते हैं। शांति निकेतन में आज के दिन इस उत्सव का आनंद ही अलग होता है। आज के दिन लोग गाना गुनगुनाते हैं - "ओ गृहवासी दौराजा खोल....। रंग, गुलाल से रंगे लोगों को देखकर मन अनायास गा उठता है -

"बाहिरे अेसो, रोंगो खैलो, ओ बाबा होली अेसेचे।

ओडिशा की होली

ओडिशा राज्य में होली का उत्सव कुछ मामूली पहलुओं को छोड़कर पश्चिम बंगाल जैसा ही मनाया जाता है। होली उड़ीसा का प्रसिद्ध त्यौहार है। यहां की होली का दूसरा नाम "डोल पूर्णिमा" भी है। इस अवसर पर यहां के लोग भगवान जगन्नाथ की मूर्ति की पूजा करते हैं। रंगों, गुलाल से यहां के लोग भी त्यौहार मनाते हैं। "पीठा" एक प्रकार का मीठा पकवान इस दिन अवश्य बनाते हैं।

बिहार की होली

बिहार राज्य में भी होली का उत्सव बहुत उल्लासपूर्वक मनाया जाता है। यहां भी लोग गाते-बजाते, रंग खेलते सड़कों पर निकलते हैं। बिहार में आज के दिन का मुख्य पकवान मालपुआ और दही-बड़ा होता है। इनके होली गीतों की धुनें भी बहुत मधुर होती है। मुझे कुछ परिचित के गीत याद आ रहे हैं -

'फगुआ अैल, फगुआ गैल, फगुआ चलियो रे।"

बिहार के पूर्णिया जिले के सिकलीगढ़ में वह स्थान है, जहां होलिका भगवान विष्णु के परम भक्त प्रहलाद को अपनी गोद में लेकर जलती चिता के बीच बैठ गईं थीं। इस गांव को धरहरा के नाम से जाना जाता है। इस चिता में होलिका जल गईं थीं और भक्त

प्रहलाद विष्णु भक्ति के कारण बच गए थे। होलिका को वरदान था कि अग्नि उन्हें जला नहीं सकती थी। यह कहानी सभी जानते हैं, पर यह नहीं जानते कि यह जगह कौन सी है और कहा स्थित है।

ब्रज की होली

"आज बिरज में होरी रे रसिया,
होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया।।"

ब्रज की होली देश भर में प्रसिद्ध है। ब्रज की होली कई मामले में खास तो है ही, लेकिन यहां की होली के रंग अपने आप में खास हैं। होली के रंगों में श्रद्धा और भक्ति का ऐसा मिश्रण होता है जो होली पर मथुरा, बृंदावन आने वाले लोगों को भक्ति रस में सराबोर कर देता है। इस भक्ति भाव को देखकर किसी गीतकार ने गाया है –

"नेह लग्यो मेरो श्याम सुंदर सों।"

ब्रज में होली का आयोजन बसंत पंचमी से आरंभ हो जाता है। शाम/रात्रि के समय होली गीतों के आयोजन घरों में होने लगते हैं। जहां बच्चे, बूढ़े और जवान सभी इस कार्यक्रम में भाग लेते हैं। वैसे तो बसंत पंचमी से ही व्रज के अंतर्गत आने वाले अलीगढ़ आदि शहरों के मंदिरों की पोशाक भोग और श्रृंगार तक में इसकी झलक दिखने लगती है। बदलते समय में अब सिर्फ कुछ मंदिरों में टेसू के फूलों का रंग देखेने के मिलता है। कुछ-कुछ घरों में टेसू के फूलों का रंग आज भी बनाया जाता है।

बरसाना में लड्डू की होली और लट्ठमार होली बहुत प्रसिद्ध है। लड्डू की होली ब्रज की होली का पहला दिन है। लड्डू मार होली में मंदिरों में भक्तों का जमावड़ा होता है। ये लोग नाचते हैं, गातेहैं और एक दूसरे पर लड्डू फेंक कर होली खेलते हैं। अंततः ये लड्डू प्रसाद के रूप में वितरित कर दिए जाते हैं।

वहीं बरसाना की ही रंगीली गली में, लट्ठमार होली के दिन, बरसाना की महिलाएं लाठियां लेकर पुरुषों पर वार करते हुए उन्हें दूर तक भगाती हैं और पुरुष उन पर रंग फेकते जाते हैं। चारों ओर का नजारा यानि कि यत्र-तत्र सर्वत्र रंग ही रंग दिखता है और गायक टोली गा उठती है –

'नदिया रंग सौं भरी निकसन को डगर ना रहीं।"

श्रीकृष्ण जी सबसे मुख्य और प्रसिद्ध मंदिर वृंदावन में स्थित "बांके बिहारी जी का मंदिर" है। यहां होली के दिन श्री राधे कृष्ण का श्रृंगार सुंदर और ताजे फूलों से किया जाता है। यहां भक्तगण, श्रद्धालु और पुजारी फूलों की पंखुड़ियों से होली खेलते हैं।

गोकुल की छड़ीमार होली अपने आप में बहुत प्रसिद्ध है। कहते हैं कि कान्हा जी जब थोड़े बड़े हुए तो होली खेलने गोकुल जाने लगे। तब वहां की महिलाओं ने छोटी-छोटी छड़ी से इन्हें मार के भगाना आरंभ किया, क्योंकि लाठ से मारने से छोटे से कान्हा जी को चोट लगने का डर था। इस दिन महिलाओं का भाव यही रहता था –

"होरी खेल आयौ श्याम, आज जाए रंग में बोरो रहीं।।"

होली खेलते समय की नोंक-झोंक भी देखने योग्य है –

"नैनन में पिचकारी दई, मोय गारी दई,
होरी खेली न जाय, होरी खेली न जाय।।

मध्य प्रदेश में होली का त्यौहार होलिका दहन से रंग पंचमी तक चलता है। यहां के लोगों का उल्लास इस दिन देखते ही बनता है। ढफ, ढोल की ताल पर नाचती, मिठाइयों को बांटते लोगों को देखना अपनेआप में एक सुखद अनुभूति होती है। रंग-पंचमी के दिन माहौल फिर से वही होली खेलने के दिन का हो जाता है। शाम के समय लोग मिलने-जुलने, गीत-संगीत, सुस्वाद भोजन का आयोजन करते हैं और इस प्रकार होली के त्यौहार का समापन होता है।

छत्तीसगढ़ में होली का त्यौहार दो दिन यानि होलिका दहन और धुलेडी का ही होता है। होली में रंग खेलने के बाद स्नान कर व नए वस्त्र पहन कर लोग अपने प्रियजनों के घर होली मिलने जाते हैं। मुख मीठा कर सभी एक-दूसरे को अपनी शुभकामनाएं देते हैं।

सभी प्रांत सभी जगह लोग इस त्यौहार को अपने-अपने ढंग से मनाते हैं। हर त्यौहार के साथ हमारी धार्मिक भावनाएं और परंपराएं भी जुड़ी रहती हैं। हमारे चतुर्वेदी समाज में भी होली दहन के दिन शाम/रात को होलिका पूजन होता है। इस पूजन की थाली में रोली, गुलाल, हल्दी, दीपक, अगरबत्ती, माचिस, अठयावरी, पिचकियां, हलुआ, लोटे में जल रखते हैं। लोटे के जल में कुछ चावल के दाने या हल्दी, या गुड़ का छोटा टुकड़ा और चना दाल डालते हैं। ऐपन भी साथ में रखा जाता है। होलिका के सामने थोड़ी सी जगह साफ कर उस पर हल्दी लगा कर सतिया बना दिया जाता है। अब जल, रोली, चावल, गुलाल आदि होली पर चढ़ा दिया जाता है। दीपक, अगरबत्ती जलाकर धुआं देते हैं। फिर हलुआ-पूड़ी चढ़ा दिया जाता है। हर गांव की प्रथा अलग-अलग होती है। कुछ लोगों में होली पर अठयावरी और पिचकिया ही चढ़ाया जाता है। इसी प्रकार कुछ घरों में ठंडी होली पूजी जाती है और कहीं-कहीं जलती होली पूजने का रिवाज है। जलती होली में पुरुष गन्ना होरा और गोला भूनते हुए होली की परिक्रमा करते हैं। घर में बने सभी पकवानों का भोग और अछूता लोग अपने रिवाज के अनुसार करते हैं। कुछ स्थानों पर होलिका दहन के दिन भोग और अछूता करते हैं तो कुछ परिवारों में होली खेलने के दिन भोग-अछूता किया जाता है।

आप सभी को होली की बहुत-बहुत शुभकामनाएं
इति

महाशिवरात्रि पर्व के बारे में 10 रोचक तथ्य

- दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ

महा शिवरात्रि शब्द का अर्थ है शिव की महान रात। महाशिवरात्रि शिव पर्व है। हिंदू पंचाग कैलेंडर के अनुसार यह त्योहार प्रतिवर्ष यह फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को आता है। अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार 08 मार्च 2024 शुक्रवार के दिन यह त्योहार मनाया जाएगा। आओ जानते हैं इस महापर्व के 10 रोचक तथ्य।

1. **शिव प्रकटोत्सवः**- महाशिवरात्रि हिंदू धर्म का सबसे बड़ा त्योहार माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन भगवान शिव प्रकट हुए थे। इसे शिवजी के जन्मोत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। माना जाता है कि सृष्टि की शुरुआत में इसी दिन आधी रात में भगवान शिव का निराकार से साकार रूप में (ब्रह्म से रुद्र के रूप में) अवतरण हुआ था। ईशान संहिता में बताया गया है कि फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की रात आदि देव भगवान श्रीशिव करोड़ों सूर्यों के समान प्रभा वाले ज्योतिर्लिंग रूप में प्रकट हुए।
2. **जलरात्रिः**- प्रलय की बेला में इसी दिन प्रदोष के समय भगवान शिव तांडव करते हुए ब्रह्मांड को तीसरे नेत्र की ज्वाला से भस्म कर देते हैं। इसलिए इसे महाशिवरात्रि या जलरात्रि भी कहा गया है।
3. **शिव विवाह उत्सवः**- इस दिन को शिव पार्वती के विवाह की वर्षगांठ के तौर पर भी मनाया जाता है, क्योंकि इस दिन उनका माता पार्वती जी के साथ विवाह हुआ था। इस दिन भगवान शंकर की शादी भी हुई थी।
4. **बोधोत्सवः**- शिवरात्रि बोधोत्सव है। ऐसा महोत्सव, जिसमें अपना बोध होता है कि हम भी शिव का अंश हैं, उनके संरक्षण में हैं। इसीलिए इस दिन रात्रि में ध्यान साधना करने का विधान भी है।
5. **चंद्र सूर्य का मिलनः**- ज्योतिष शास्त्र के मुताबिक फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी तिथि में चंदमा सूर्य के नजदीक होता है। उसी समय जीवनरूपी चंद्रमा का शिवरूपी सूर्य के साथ योग- मिलन होता है। इसलिए इस चतुर्दशी को शिवपूजा करने का विधान है।
6. **चार प्रहर पूजाः**- महाशिवरात्रि पर शिवजी की जलाभिषेक, पंचामृत अभिषेक और रुद्राभिषेक करके प्रसन्न किया जाता है। शिवजी की पूजा रात्रि के 4 प्रहर में होती है।
7. **शिव बारातः**- महाशिवरात्रि पर शिवजी की पाल्की निकलती है और कई जगहों पर शिव बारात का आयोज होता है। रात में उनकी बारात निकाली जाती है। रात में पूजा कर फलाहार किया जाता है। अगले दिन सवेरे जौ, तिल, खीर और बेल पत्र का हवन करके व्रत समाप्त किया जाता है।
8. **निशीथ काल पूजाः**- जिस दिन फाल्गुन मास की कृष्ण चतुर्दशी निशीथव्यापिनी तो उसी दिन महाशिवरात्रि का पर्व मनाते हैं। क्योंकि महाशिवरात्रि की मुख्य पूजा निशीथ काल में होती है। निशीथकाल की पूजा के बाद अगले दिन ही व्रत खोलना चाहिए।
8. **शिव पाठः**- महाशिवरात्रि के दिन शिव पुराण का पाठ और महामृत्युंजय मंत्र या शिव के पंचाक्षर मंत्र *ॐ नमः शिवाय' का जाप करना चाहिए। इसी के साथ ही शिव चालीसा पढ़ सकते हैं।*
9. **महिलाओं का पर्वः**- यह अविवाहित महिलाओं के लिए एक विशेष त्यौहार है, जो भगवान शिव की तरह एक पति की चाह रखती हैं वे इस दिन व्रत रख कर भगवान की साधना करती है। विवाहित महिलाएँ सदा सुहागन और अपने पति की लम्बी उम्र के लिए प्रार्थना करती हैं।
10. **शिवरात्रि की कथाः**- महाशिवरात्रि की कथा एक साहूकार, कर्जदार शिकारी और हिरण से जुड़ी है। कर्ज नहीं चुकाने के कारण साहूकार शिकार को शिवमठ में बंदी बना लेता है। संयोग से उस दिन शिवरात्रि थी। शिकारी वहां ध्यान मग्न होकर कथा सुनता रहता है। कथा श्रवण के प्रभाव से शाम को साहूकार उसे बुलाकर कर्ज चुकाने के लिए और मौहलत दे देता है। वहां अनजाने में ही शिवपूजा कर बैठता है। शिकारी शिकार करने जाता है तो वहां रात हो जाती है और कोई शिकार नहीं मिलता है। भूखा प्यासा तालाब के किनारे लगे बिल्वपत्र के वृक्ष पर बैठकर रात गुजारने लगता है। उसे नहीं पता होता है कि वृक्ष के नीचे शिवलिंग है, जिस पर अनजाने में ही उसे बिल्वपत्र अर्पित हो जाता है। रात में उसे एक गर्भवती हिरणी नजर आती है। उसे वह मारने लगता है तभी वह हिरणी कहती है कि मैं अपने बच्चे को जन्म देकर पुनः तुम्हारे पास आ जाऊंगी। दूसरी हिरणी आती है तो वह कहती है कि मैं अपने पति के साथ रहकर तुम्हारे पास आ जाऊंगी। इसी प्रकार वहां से एक तीसरी हिरणी अपने बच्चों के साथ निकली है तो वह भी कहती है कि मैं इन बच्चों को इनके पिता के पास छोड़कर

आती हूं। तीन हिरणियों को छोड़ने के बाद एक हिरण उधर से गुजरता है।

हिरण वहां किसी को ढूंढते हुए आ जाता है जब शिकारी उसे मारने लगता है तो वह कहता है कि 'हे शिकारी! यदि तुमने मुझसे पूर्व आने वाली तीन मृगियों तथा छोटे-छोटे बच्चों को मार डाला है, तो मुझे भी मारने में विलंब न करो, ताकि मुझे उनके वियोग में एक क्षण भी दुःख न सहना पड़े। मैं उन हिरणियों का पति हूं। यदि तुमने उन्हें जीवनदान दिया है तो मुझे भी कुछ क्षण का जीवन देने की कृपा करो। मैं उनसे मिलकर तुम्हारे समक्ष उपस्थित हो जाऊंगा।' मृग की बात सुनते ही शिकारी के सामने पूरी रात का घटनाचक्र घूम गया। उसने सारी कथा मृग को सुना दी। इस घटनाक्रम में शिकारी से अनजाने में ही शिवलिंग की पूजा हो जाती है। उपवास, रात्रि-जागरण तथा शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ने से अनजाने में ही पर शिवरात्रि की पूजा पूर्ण हो गई। थोड़ी ही देर बाद वह मृग सपरिवार शिकारी के समक्ष उपस्थित हो गया, ताकि वह उनका शिकार कर सके, किंतु जंगली पशुओं की ऐसी सत्यता, सात्विकता एवं सामूहिक प्रेमभावना देखकर शिकारी को बड़ी ग्लानि हुई। उसने मृग परिवार को जीवनदान दे दिया। अतः अनजाने में शिवरात्रि के व्रत का पालन करने पर शिकारी को मोक्ष और शिवलोक की प्राप्ति हुई।

चैत्र नवरात्रि हिंदुओं का एक प्रमुख त्योहार

- **शिवांगी चतुर्वेदी**, भोपाल

चैत्र नवरात्रि 2024 हिंदुओं का एक प्रमुख त्योहार है। नवरात्रि शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है, जिसका मतलब है नौ रातें. कुछ राज्यों में नवरात्रि को गुड़ी पड़वा के नाम से भी जाना जाता है. चैत्र माह की पहली तिथि से ही नवरात्रि की शुरुआत हो जाती है. इसी दिन से हिन्दू नववर्ष का भी आरंभ होता है।

चैत्र नवरात्रि में लोग लगातार 9 दिनों तक मां दुर्गा के 9 स्वरूपों यानी कि शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, मां कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री की बड़े ही विधिविधान के साथ पूजा करते हैं. नवरात्रि के पहले तिथि को कलश स्थापना की जाती है. उसके बाद 9 दिनों तक उस कलश का पूजन किया जाता है।

इस दिन से होगी चैत्र नवरात्रि की शुरुआत

इस बार चैत्र नवरात्रि की शुरुआत 9 अप्रैल यानी मंगलवार से होगी. नवरात्रि के पहले दिन घटस्थापना की जाती है. इस दिन मां शैलपुत्री की पूजा की जाती है. इस दिन घटस्थापना का शुभ मुहूर्त सुबह 06 बजकर 1 मिनट से लेकर 10 बजकर 15 मिनट तक रहेगा.

क्या होगा माता का वाहन

चैत्र नवरात्रि में मां दुर्गा का वाहन इस बार घोड़ा होगा. माता रानी घोड़े पर सवार होकर आएंगी. मां दुर्गा का वाहन क्या होगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि नवरात्रि की शुरुआत किस दिन से हो रही है।

इस साल नवरात्रि की शुरुआत 9 अप्रैल, मंगलवार से हो रही है, इसलिए इस बार मां दुर्गा का वाहन अश्व यानी कि घोड़ा होगा. मां दुर्गा की घोड़े पर सवारी शुभ नहीं मानी जाती है. माता का घोड़े पर सवार होकर आना आपदा का संकेत देता है.

चैत्र नवरात्रि का महत्व

चैत्र माह में आने वाली नवरात्रि को चैत्र नवरात्रि और शरद ऋतु में आने वाली नवरात्रि को शारदीय नवरात्रि के नाम से जाना जाता है. नवरात्रि में मां दुर्गा को प्रसन्न करने और उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए उनके नौ रूपों की पूजा-अर्चना की जाती है. नवरात्रि में माता रानी का पाठ करने से देवी भगवती की खास कृपा होती है।

हिन्दू पंचांग के अनुसार नए वर्ष के प्रारंभ से राम नवमी तक चैत्रनवरात्रि का पर्व मनाया जाता है. इस त्योहार को वसंत नवरात्रि के नाम से भी जाना जाता है. चैत्र नवरात्रि के पहले दिन घटस्थापना की जाती है. घटस्थापना को कलश स्थापना भी कहते है. इस दिन से अगले 9 दिनों तक मां के अलग-अलग स्वरूपों की पूजा होती है. चैत्र नवरात्रि के पहले दिन घटस्थापना के साथ अखंड ज्योति जलाने का भी विशेष महत्व होता है. माना जाता है कि जो भक्त नौ दिनों तक व्रत रखकर माता रानी की पूजा करते हैं माता रानी उसके जीवन का सारे कष्ट हर लेती हैं।

जीवन में षोडश (सोलह) संस्कार का महत्व

- अभयराज चतुर्वेदी, गुरूग्राम

अधिकतर को तो यह भी नही पता होगा सोलह संस्कार होते कोनसे है आइये आज हम आपको बताते हैं अपने धर्म के विषय मे जानकारी तो कम से कम होनी ही चाहिये.. संस्कारों का महत्त्व: मानव जीवन में संस्कारों का अत्यधिक महत्त्व है। संस्कारों का सर्वाधिक महत्त्व मानवीय चित्त की शुद्धि के लिए है। संस्कारों के द्वारा ही मनुष्य का चरित्र निर्माण होता है और विचारों के अनुरूप संस्कार; क्योंकि चरित्र ही वह धुरी है, जिस पर मनुष्य का जीवन सुख, शान्ति और मान-सम्मान को प्राप्त करता है। संस्कार के द्वारा मानव चरित्र में सदगुणों का संचार होता है, दोष, दुर्गुण दूर होते हैं। मानव जीवन को जन्म से लेकर मृत्यु तक सार्थक बनाने तथा सत्य-शोधन की अभिनव व्यवस्था का नाम संस्कार है। संस्कारों का मूल प्रयोजन आध्यात्मिक भी है तथा नैतिक विकास का भी है; क्योंकि मानव जीवन को पवित्र एवं उत्कृष्ट बनाने वाले आध्यात्मिक उपचार का नाम सस्कार है। श्रेष्ठ संस्कारवान मानव का निर्माण ही संस्कारों का मुख्य उद्देश्य है। संस्कारों के द्वारा ही मनुष्य में शिष्टाचरण एवं सभ्य आचरण की प्रवृत्ति का विकास होता है। इस अर्थ में सर्वसाधारण के मानसिक, चारित्रिक एवं भावनात्मक विकास के लिए सर्वांग सुन्दर विधान संस्कारों का है।

प्रत्येक मनुष्य जन्म के साथ कुछ गुण और कुछ अवगुण लेकर पैदा होता है। उस पर पूर्व जन्मों के संस्कार भी पड़ते हैं। ऐसी मान्यता हिन्दू धर्म की है। अतः आयु वृद्धि के साथ-साथ उस पर नये सरकार भी पड़ते रहते हैं।

अतः पुराने संस्कारों को प्रभावित करके उनमें परिवर्तन, परिवर्द्धन कर अनुकूल संस्कारों का निर्माण करने की प्रक्रिया संस्कार कहलाती है। विभिन्न धार्मिक संस्कार एवं उनका स्वरूपः हमारे भारतीय धर्म के अनुसार सोलह संस्कारों द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिष्कार किया जाता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति के सोलह संस्कारों में शामिल हैंः।

1 गर्भाधान संस्कार

यह बालक के जन्म के पूर्व का संस्कार है। गर्भाधान संस्कार गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले नवदम्पत्तियों के लिए पारिवारिक दायित्व को संभालने हेतु पूर्व शिक्षण है। इस सरकार में यह बताया जाता है कि आने वाली जीवात्मा परमात्मा का स्वरूप एवं प्रतिनिधि है। उसे आमनत्रित करने के लिए अपनी योग्यता, साधन और परिस्थितियों का आकलन नवदम्पत्ति कर ले। आर्यपुरुष अपनी स्त्री के समीप सुसन्तान उत्पन्न करने के हेतु निश्चित उद्देश्य लेकर पवित्र भाव से जाये, जो भावी सन्तान को निर्मल बनाये।

2. पुंसवन संस्कार

गर्भस्थ शिशु के समुचित विकास के लिए गर्भिणी द्वारा सम्पन्न किया जाता है। यह तब किया जाता है, जब बालक के भौतिक स्वरूप का निर्माण प्रारम्भ हो जाता है। कुछ ऋषियों द्वारा यह संस्कार प्रत्येक गर्भधारण के पश्चात बार बार करना चाहिए। पुसवन संस्कार से गर्भ पवित्र हो जाता है। इस संस्कार में गर्भिणी स्त्री के दाहिने नासिका छिद्र में वटवृक्ष की छाल का रस श्रेष्ठ सन्तान की उत्पत्ति के लिए छोड़ा जाता है। इसके पश्चात गर्भपूजन करने के बाद परिवारजन श्रेष्ठ मन्त्रों का उच्चारण करते हैं। गर्भिणी नियमित रूप से पांच आहुतियां खीर अर्पित कर यज्ञ कुण्ड को देती है तथा आचार्य गण विशेष मन्त्रों का उच्चारण करते है।

3. सीमांतोन्नयन संस्कार

यह तीसरा संस्कार है। यह छठे तथा आठवें मास में किया जाता है।

4. जातकर्म संस्कार

जन्म के तुरन्त बाद सम्पन्न होता है। नाभि बन्धन नांदीमुख श्राद्ध पूर्व वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ यह सम्पन्न होता है।

5. नामकरण संस्कार

शिशु कन्या है या कि पुत्र, इसका भेद न करते हुए यह संस्कार किया जाता है। इसके द्वारा शिशु की मौलिक तथा कल्याणकारी प्रवृत्तियों को जगाने हेतु यह प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है। सामान्यतः यह जन्म के दसवें दिन यज्ञ कर्म के द्वारा सम्पत्र होता था। जन्म के बाद प्रसूता का शुद्धिकरण भी हो जाता था। सभी उपस्थित व्यक्ति कलश में जल लेकर अभिषेक के द्वारा शिशु पर श्रेष्ठ संस्कारों के प्रभाव की कामना करते हैं। शिशु की कमर पर मेखला इस आशा से बांधी जाती है कि नवजात शिशु निष्ठा की दृष्टि से सदैव सजग रहे। अभिभावक शिशु की कमर पर मेखला बांधकर उसके संरक्षण के प्रति तथा उसे जीवन-भर दोष, दुर्गुणों से बचाये रखते हैं। शहद चटाकर मधुर भाषण का शिक्षा इसी में समाहित है। इसके पश्चात शिशु को सूर्य का दर्शन कराकर उसको प्रखर एवं तेजस्वी बनाने की कामना के साथ राष्ट्र के प्राप्ति भी निष्ठावान बनाये रखने का शिक्षण दिया जाता है। इसके पश्चात सज्जित थाली में लिखा नाम सभी को दिखाते हुए आचार्य मन्त्रोच्चारण के साथ उसके नामन की घोषणा कहते हैं। उसे चिरंजीवी, धर्मशील एवं प्रगतिशील होने का आशीर्वाद देते हैं।

6. निष्कमण संस्कार

निष्क्रमण का तात्पर्य हैः घर से बाहर निकालना। इस संस्कार में कोई वयोवृद्ध बच्चे को गोदी में लेकर उसे बाहर का खुला वातावरण दिखाता है, ताकि बालक विराट ब्रह्मरूपी संसार को समझे। उसे सूर्य का दर्शन भी करवाया जाता है।

7. अन्नप्राशन संस्कार

यह शिशु के छठे मास में किया जाता है। उसे प्रथम अन्नाहार ग्रहण करने के बाद यह भावना की जाती है कि बालक सदैव सुसंस्कारी अत्र ग्रहण करे। सुपाच्य खीर, मधुरता का प्रतीक मधु, स्नेह का प्रतीक घी, विकार नाशक पवित्र तुलसी तथा पवित्रता का प्रतीक गंगाजल का सम्मिश्रण प्रत्येक विशिष्ट मन्त्रोच्चार के द्वारा भगवान तथा यज्ञ के प्रसाद के रूप में बच्चे को खिलाया जाता है। सात्विक आहार ग्रहण करने से उसका चिन्तन सतोगुणी बनेगा।

8. चूड़ाकर्म

चूड़ाकर्म संस्कार के साथ शिखा की तथा यज्ञोपवीत (उपनयन) के साथ सूत्र की स्थापना को भारतीय संस्कृति का आधार माना जाता है। जहां शिखा संस्कृति की गौरव पताका का प्रतीक है, वहीं सूत्र विशिष्ट संकल्पों एवं व्रतों का प्रतीक है। जन्म के पश्चात प्रथम वर्ष के अन्त अथवा तृतीय वर्ष की समाप्ति के पूर्व यह सम्पन्न होता है। हिन्दू धर्म में यह मान्यता है कि मनुष्य कई योनियों में भटककर मानव योनि प्राप्त करता है। अतः उसके अनुपयुक्त एवं अवांछनीय संस्कारों का निष्कासन बालक के समुचित मानसिक विकास हेतु आवश्यक है। मुण्डन सदा किसी तीर्थस्थान या देवस्थान पर किया जाता है, ताकि सिर से उतारे गये बालों के साथ कुसंस्कारों का शमन हो सके। आयुर्वेद के आचार्य चरक के अनुसार-श्मश्रु तथा दाढ़ी, मूंछ व नखों को काटने के पीछे यही संस्कार है। शिखा स्थान पर बालों का गुच्छा व्यक्ति की कुप्रवृत्तियों पर अंकुश रखता है।मुण्डन विधान में बालक के बालों को गौदुग्ध, दही में भिगोकर ब्रह्म, विष्णु महेश के प्रतीक के रूप में तीन गुच्छों में कुश तथा कलावे से बांधते हैं। इसका आशय यह है कि शुभ देव शक्तियां सदैव मस्तिष्क तन्त्र का इस्तेमाल करें। गायत्री मन्त्रोच्चार के साथ पांच आहुतियां यज्ञ में मिष्ठान्न के साथ दी जाती हैं। यज्ञशाला से बाहर मुण्डन कर बालों को गोबर में रख जमीन में गाड़ दिया जाता है। फिर मस्तिष्क पर स्वस्तिक या ओम शब्द चन्दन या रोली से लिखते हैं।

9. कर्णवेध संस्कार

इस संस्कार में बच्चे का कान छेदने का रस्म पूरा किया जाता है। इस संस्कार को शिशु के जन्म के बाद 6 माह से लेकर 5 वर्ष तक कभी भी किया जा सकता है।

10. विद्यारम्भ संस्कार

यह आयु के पांचवें वर्ष में तब सम्पन्न कराया जाता है, जब बालक शिक्षा ग्रहण करने के योग्य हो जाता है। शिक्षा मात्र शिक्षा न रहकर विद्या बने, इसीलिए गणेश व लक्ष्मी के पूजन के बाद विद्या तथा ज्ञानवर्द्धन करने वाले इस संस्कार को सरस्वती का नमन कर पूर्ण किया जाता है। शिक्षा के उपकरण दवात, कलम, कॉपी, पट्टिका को वेद मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर पूजन किया जाता है। विद्यार्थी गुरु को प्रणाम करता है। बालक श्रेष्ठ मानव बने। बालक पट्टी या कॉपी पर लिखता है, तो उस पर अक्षत छुड़वाकर बालक को तिलक लगाकर आशीर्वाद देते हैं। बालक श्रेष्ठ लोकसेवी व नागरिक बने, यही कामना की जाती है।

11. उपनयन संस्कार

यज्ञोपवीत, अर्थात उपनयन संस्कार दूसरा जन्म है। इस संस्कार में बालक को वैदिक मन्त्रोच्चारों के बीच विधि-विधान द्वारा तीन बंटे हुए धागों की पतली डोरी धारण करवाई जाती है।

इसमें नौ धागे, नौ गुणों (विवेक, पवित्रता, बलिष्ठता, शान्ति, साहस, स्थिरता, धैर्य, कर्तव्य, समृद्धि) प्रतीक माने जाते हैं। यज्ञोपवीतधारी इसे मन्त्रोच्चार के साथ कन्धों पर धारण करते हैं और श्रेष्ठ कार्यो का संकल्प लेते हैं। भारतीय संस्कृति में लिंग, जाति, वर्ण आदि किसी भी प्रकार का भेदभाव किये बिना यज्ञोपवीत कराने की बात कही गयी है। यज्ञोपवीत व शिखा के बिना किसी भी प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान पूर्ण नहीं होता है।

12. वेदारम्भ

यज्ञोपवीत संस्कार के साथ प्राचीनकाल में वेदारम्भ की शिक्षा प्रारम्भ होती थी। वेद जीवन विकास, जीवन एवं परिष्कार के महत्त्व को दर्शाते हैं। वेदों की शिक्षा प्रारम्भ करने से पूर्व बालक श्रद्धापूर्वक गुरु का पूजन करता है। इसके बाद वेद ऋचाओं का पाठ इसके बाद उससे भिक्षा मांगने की क्रिया पूर्ण करवायी जाती है।

13. केशान्त संस्कार

पुराने समय में बच्चे विद्या ग्रहण करने गुरुकुल जाया करते थे, जब उनकी शिक्षा पूरी हो जाती थी तब गुरुकुल में बच्चों का केशांत संस्कार होता था। इस संस्कार में बच्चे को पहली बार हजामत (दाढ़ी) बनवाने की अनुमति दी जाती थी। इसे गोदान संस्कार के नाम से भी जाना जाता है।

14. समावर्तन संस्कार

शिक्षा की समाप्ति पर किया जाने वाला यह सरकार है। यह संस्कार पचीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला शिक्षार्थी गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर पूर्ण करता है और अपने परिवार, समाज तथा -देश के प्रति सभी कर्तव्यों को पूर्ण करता है।

15. विवाह संस्कार

हिन्दुओं की सामाजिक व्यवस्था का एक प्रमुख संस्कार हैः विवाह संस्कार। विवाह को हमारी संस्कृति में शरीर का ही नहीं, मन तथा आत्मा का पवित्र बन्धन माना जाता है। इस संस्कार के पूर्ण होने पर पति-पत्नी एकसूत्र में बंध जाते हैं तथा एक-दूसरे के सुख-दुःख में समान रूप से सहभागी होकर जीवनपर्यन्त सभी प्रकार के धार्मिक, सामाजिक कर्तव्यों को पूर्ण करने की शपथ लेते है।

कन्यादान पाणिग्रहण, ग्रन्धिबन्धन, सप्तपदी, शिलारोहण, लाजाहोम, शपथ, आश्वासन मांग भरना, (सुमंगली) यज्ञ आहुति जैसे धार्मिक विधि-विधान सम्पन्न होते हैं। वधू पक्ष वाले कन्या की विदाई करते हैं।

16 अंत्येष्टि संस्कार

मानव शरीर इस संसार की सबसे बड़ी विभूति है। मृत्यु इसकी चिरन्तन गति है। व्यक्ति जब मृत्यु को प्राप्त होता है, तो उसकी आत्मा की शान्ति व वातावरण की शुद्धि के लिए हमारी भारतीय संस्कृति में कुछ विशेष संस्कार किये जाते हैं। उसे अंत्येष्टि संस्कार कहते हैं। मृतक को इन संस्कारों द्वारा सम्मानपूर्वक विदाई दी जाती है। सर्वप्रथम मृत व्यक्ति को स्नान कराया जाता है। उसके मस्तक तथा शरीर पर चन्दन का लेप लगाया जाता है। श्मशान भूमि को गोबर मिट्टी से पवित्र किया जाता है। यज्ञ कुण्ड बनाया जाता है। मृतक शरीर की अंत्येष्टि हेतु वट, पीपल, आम, गूलर, ढाक, शमी, चन्दन, अगर इत्यादि पवित्र काष्ठों की लकड़िया एकत्रित की जाती हैं। मन्त्रोच्चार के साथ घी आदि से पांच पूर्णाहूतियां दी जाती हैं। शव का दाह संस्कार करके अंत्येष्टि के साथ पिण्डदान किया जाता है, जो जीवात्मा की शान्ति के लिए होता है। कपालक्रिया के बाद अस्थि, अवशेष एकत्र कर उसे कलश को लाल वस्त्र में लपेटकर किसी पवित्र स्थान में धार्मिक विधि-विधान से विसर्जित कर दिया जाता है। शरीर समाप्त होने के तेरहवें दिन मरणोत्तर संस्कार किया जाता है। यह शोक, मोह की विदाई का विधिवत आयोजन है। मृत्यु के कारण घर में शोक, वियोग का वातावरण रहता है। इन तेरह दिनों में शोक-सन्ताप को विदाई दे देनी चाहिए। मृत्योपरान्त घर की पवित्रता के लिए लिपाई-पुताई की जाती है। पिण्डदान के साथ तर्पण किया जाता है, फिर श्रद्धापूर्वक उसका श्राद्ध किया जाता है। इसमें स्वर्गीय पितरों के प्रति भी श्रद्धाभाव प्रकट कर भावी सन्ततियों पर पितरों की कृपा एवं आशीर्वाद मांगा जाता है।

हिन्दुओं में वार्षिक श्राद्ध करने की परम्परा है। अतः दिवंगत जीवात्मा की सदगति के लिए अंत्येष्टि संस्कार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। भारतीय संस्कृति में, विशेषतः हिन्दुओं में किये जाने वाले इन संस्कारों का आज भी विशेष महत्त्व है। यद्यपि आज की व्यस्ततम जिन्दगी में इन संस्कारों का पूर्ण विधि-विधान से पालन नहीं हो पाता, तथापि हिन्दू कुछ बदले हुए स्वरूपों में इसका पालन करते है। वस्तुतः हिन्दू धर्म के ये संस्कार मानव व्यक्ति के श्रेष्ठ सन्तुलित व्यक्तित्व के निर्माण में काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाहते हैं। आधुनिक सभ्यता के प्रभाव में इन संस्कारों का स्वरूप अवश्य ही बदला है, किन्तु ये संस्कार अपने आदर्शो और श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों एवं विश्वास के कारण आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने कि प्राचीन भारतीय संस्कृति में थे। ये संस्कार चरित्र निर्माण के प्रमुख आधार कहे जा सकते हैं। भारतीय संस्कार यह बताते हैं कि जीवन मृत्यु के साथ समाप्त नहीं हो जाता।

आपका शरीर स्वस्थ्य रहे आप दीर्घायु हों आपका जीवन मंगलमय हो प्रभु की कृपा अनवरत आप पर बनी रहे।

हिन्दी बोलने का प्रयास करें...

- प्रदीप चतुर्वेदी, गाजियाबाद

ये वो उर्दू के शब्द जो आप प्रतिदिन प्रयोग करते हैं, इन शब्दों को त्याग कर मातृभाषा का प्रयोग करें...

उर्दू	हिंदी
01 ईमानदार	– निष्ठावान
02 इंतजार	– प्रतीक्षा
03 इत्तेफाक	– संयोग
04 सिर्फ	– केवल, मात्र
05 शहीद	– बलिदान
06 यकीन	– विश्वास, भरोसा
07 इस्तकबाल	– स्वागत
08 इस्तेमाल	– उपयोग, प्रयोग
09 किताब	– पुस्तक
10 मुल्क	– देश
11 कर्ज़	– ऋण
12 तारीफ़	– प्रशंसा
13 तारीख	– दिनांक, तिथि
14 इल्ज़ाम	– आरोप
15 गुनाह	– अपराध
16 शुक्रीया	– धन्यवाद, आभार
17 सलाम	– नमस्कार, प्रणाम
18 मशहूर	– प्रसिद्ध
19 अगर	– यदि
20 ऐतराज़	– आपत्ति
21 सियासत	– राजनीति
22 इंतकाम	– प्रतिशोध
23 इज्जत	– मान, प्रतिष्ठा
24 इलाका	– क्षेत्र
25 एहसान	– आभार, उपकार
26 अहसानफरामोश	– कृतघ्न
27 मसला	– समस्या
28 इश्तेहार	– विज्ञापन
29 इम्तेहान	– परीक्षा
30 कुबूल	– स्वीकार
31 मजबूर	– विवश
32 मंजूरी	– स्वीकृति
33 इंतकाल	– मृत्यु, निधन
34 बेइज्जती	– तिरस्कार
35 दस्तखत	– हस्ताक्षर

36 हैरानी – आश्चर्य
37 कोशिश – प्रयास, चेष्टा
38 किस्मत – भाग्य
39 फैसला – निर्णय
40 हक – अधिकार
41 मुमकिन – संभव
42 फर्ज़ – कर्तव्य
43 उम्र – आयु
44 साल – वर्ष
45 शर्म – लज्जा
46 सवाल – प्रश्न
47 जवाब – उत्तर
48 जिम्मेदार – उत्तरदायी
49 फतह – विजय
50 धोखा – छल
51 काबिल – योग्य
52 करीब – समीप, निकट
53 जिंदगी – जीवन
54 हकीकत – सत्य
55 झूठ – मिथ्या, असत्य
56 जल्दी – शीघ्र
57 इनाम – पुरस्कार
58 तोहफ़ा – उपहार
59 इलाज – उपचार
60 हुक्म – आदेश
61 शक – संदेह
62 ख्वाब – स्वप्न
63 तब्दील – परिवर्तित
64 कसूर – दोष
65 बेकसूर – निर्दोष
66 कामयाब – सफल
67 गुलाम – दास
68 जन्नत –स्वर्ग
69 जहन्नुम –नर्क
70 खौफ़ –डर
71 जश्न –उत्सव
72 मुबारक –बधाई/शुभेच्छा
73 लिहाजा. –इसलीए
74 निकाह –विवाह/लग्न
75 आशिक –प्रेमी
76 माशुका –प्रेमिका
77 हकीम –वैध
78 नवाब –राजसाहब
79 रुह –आत्मा
80 खुद्कुशी –आत्महत्या
81 इज़हार –प्रस्ताव
82 बादशाह –राजा/महाराजा
83 ख़्वाहिश –महत्वाकांक्षा
84 जिस्म –शरीर/अंग
85 हैवान –दैत्य/असुर
86 रहम –दया
87 बेरहम –बेदर्द/दर्दनाक
88 खारिज –रद्द
89 इस्तीफ़ा –त्यागपत्र
90 रोशनी –प्रकाश
91मसीहा –देवदुत
92 पाक –पवित्र
93 क़त्ल –हत्या
94 कातिल –हत्यारा
95 मुहैया – उपलब्ध
96 फ़ीसदी – प्रतिशत
97 कायल – प्रशंसक
98 मुरीद – भक्त
99 कीमत – मूल्य (मुद्रा में)
100 वक्त – समय
101 सुकून – शाँति
102 आराम – विश्राम
103 मशरूफ़ – व्यस्त
104 हसीन – सुंदर
105 कुदरत – प्रकृति
106 करिश्मा – चमत्कार
107 इजाद – आविष्कार
108 ज़रूरत – आवश्यक्ता
109 ज़रूर – अवश्य
110 बेहद – असीम
111 तहत – अनुसार

इनके अतिरिक्त हम प्रतिदिन अनायास ही अनेक उर्दू शब्द प्रयोग में लेते हैं, कारण है बोलिवुड और मीडीया जो हमारी मातृभाषा पर ग्रहण लगाते आ रहे हैं।

हिन्दी हमारी राजभाषा एवं मातृभाषा हैं इसका सम्मान करें।

भाषा बचाईये, संस्कृति बचाईये

नव वर्ष - महत्त्वपूर्ण जानकारी

- विभा अतुल (मैनपुरी/ लखनऊ)

सनातन धर्म या हिन्दू धर्म का नव संवतसर (वर्ष) चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा (9 अप्रैल 24) से शुरू होता है, उप्र संस्कृत संस्थान के आचार्य महेंद्र पाठक के अनुसार चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से ही बांसतिक नवरात्र भी प्रारंभ होता है , इसके साथ ही देवी पूजन के साथ हिंदू नववर्ष की शुरुआत होती हैं , आचार्य ने बताया कि इसी दिन ग्रहों का नया मंत्रिमंडल भी बनता है, जिससे आने वाले नूतन वर्ष का फलादेश निकाला जाता हैं। ग्रहों के गोचन फल के आधार पर लोग अपना भाग्य फल भी निकलवाते है, खेती, व्यापार,वर्षा पर्यावरण पर विचार कर अध्ययन किया जाता है।

इसी तरह हर धर्म या संप्रदाय के नववर्ष पर जानकारी प्राप्त करना महत्वपूर्ण होगा।

उड़िया समाज

मान्यताओं के अनुसार सूर्य जब मेष राशि में प्रवेश करते हैं,तब उड़िया समाज नया साल मनाते हैं,इसे पना या महआवइशउबआ संक्रांति भी कहते हैं, अंग्रेजी वर्ष के अनुसार पना संक्रांति 13 या 14अप्रैल के आसपास होती है, वहां लोग सूर्य पूजा के साथ पारंपरिक रूप से नववर्ष का स्वागत करते हैं इस दिन कोर्णाक सूर्य मंदिर में दर्शन का विशेष महत्व होता है।लोग पना एवं नारियल पानी पीते हैं।

बंगाली समाज

हिंदू पंचांग के वैशाख के पहले दिन बंगाली समाज का नववर्ष शुरू होता है, बांग्ला में इसे पोइला वैशाख कहते हैं, बंगाली लोग पारंपरिक रूप से उत्सव मनाते हुए मां काली की पूजा करते हुए बंगाली मिठाई लेचा व लेडी छेनी प्रसाद के रूप में बांटते हैं, समाज के लोग –जब आपस में मिलते है तो एक दूसरे को नूतन बछोर शुभो नवोवर्ष कहकर बधाई देते है।

सिंधी समाज

सिंधी समाज के पं अशोक शर्मा के अनुसार सिंधी समाज के त्योहार चंद्र गति से मनाए जाते हैं, सिंधी समाज में चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के बाद चेटीचंड त्योहार के रूप में मनाते हैं,इस दिन भगवान झूलेलाल की पूजा करते हुए पारंपरिक उत्सव मनाते हैं। मीठे चावल एवं छोले का प्रसाद बनाया जाता है।

मलयाली समाज

मलयाली समाज के लोग मकर संक्रांति पर नववर्ष मनाते हैं, पारंपरिक रूप से सज–धज कर भगवान अयप्पा मंदिर में जाकर कर पूजा पाठ करते हैं, प्रसाद में उड़द व चावल की खिचड़ी बांटते हैं।

मराठा समाज

महाराष्ट्र में नववर्ष गुढ़ि पड़वा त्योहार के रुप में मनाया जाता है, चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को मराठा समाज के लोग अपने अपने घरों को सजा कर गुढ़ि मनाते हैं,इस दिन मंदिरों में पूजा पाठ करते हुए सज धज कर उत्सव मनाते हैं,खान पान में विशेष व्यंजन पोरन पूरी,शिरा, पकौड़े आदि बनाएं जाते हैं।

श्री माथुर चतुर्वेदी सभाओं द्वारा
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा से सम्बद्धता का आवेदन पत्र

सेवा में,

सभापति,
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा।

महोदय,

संस्था ..... की एक बैठक दिनांक ..... को ..... स्थान ..... पर आयोजित हुई जिसमें निर्णय लिया गया कि इस संस्था को श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा सम्बद्ध किया जाय। अस्तु..... संस्था को श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा से वर्तमान सत्र हेतु सम्बद्ध करने के निमित्त रूपये 251/– (दो सौ इक्यावन प्रति सत्र) सदस्यता शुल्क **"श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा"** के पक्ष में देय नगद/चैक एटपार/बैंक ड्राफ्ट द्वारा प्रदान कर रहे है।

निवेदन है कि ..... संस्था को श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा से सम्बद्ध कर सदस्य सभा बनाने की कृपा करें। संस्था ..... की ओर से हम घोषण करते है कि –

1. हमारी संस्था के सदस्य केवल श्री माथुर चतुर्वेदी है।
2. सत्र की अवधि में इस संस्था की यदि नई कार्यकारिणी गठित होती है तो उसे भी बिना शुल्क दिये सम्बद्धता के लिये आवेदन करना होगा तथा इस मध्य अवधि में संस्था की सम्बद्धता निलम्बित रहेगी।
3. दिनांक 21 व 22 मई, 2024 को देहली में आयोजित महासभा के अधिवेशन में पारित महासभा के संशोधित संविधान 2024 से हमारी संस्था अक्षरक्षः सहमत है।

हस्ताक्षर	हस्ताक्षर	हस्ताक्षर
नाम–	नाम–	नाम–
पद–कोषाध्यक्ष	पद–मंत्री	पद–सभापति
मो.नं.–	मो.नं.–	मो.नं.–
संस्था की सील	संस्था की सील	संस्था की सील

संलग्नकः–
1. बैठक में लिये निर्णय की कार्यवाही की छायाप्रति।
2. धनराशि भेजने के प्रमाण की छायाप्रति।

संस्तुति

हस्ताक्षर–
नाम–
वर्तमान स्थानीय कार्यकारिणी सदस्य–
श्री माथुर चतुर्वेदी सभा–

शाखा समाचार

गाज़ियाबाद

दिनांक 17-03-2023 को गाजियाबाद शाखा सभा के तत्वाधान

में होली मिलन समारोह का आयोजन स्थानीय सामुदायिक केंद्र साहिबाबाद में किया गया। कार्यक्रम सुबह 10:00 बजे से 4:00 बजे तक चला।

सुबह से ही कार्यकारिणी के सदस्य गण व्यवस्था में लग गए थे। सभी लोगों ने इस कार्यक्रम में अपना अमूल्य योगदान दिया। कार्यक्रम में उपस्थित जनों की संख्या लगभग पांच सौ रही। फाल्गुन मास का उमंग और उल्लास उपस्थित जनों में देखते ही बनता था। होली की मस्ती में भाव विभोर होकर सभी एक दूसरे का दिल खोल के अभिवादन कर रहे थे और पूरा हॉल पालागन - पालागन के स्वर से गूंज रहा था।

कार्यक्रम का आरंभ श्री विवेक जी मुक्की की ढोलक की थाप पर श्री प्रद्युम्न जी द्वारा गाई होली सुमंगल दाहिने होली खेलत रामनरेश से हुआ। तदुपरांत होली गायन का सिलसिला आरंभ हुआ जो 2:00 बजे तक चलता रहा एक होली समाप्त होती तो दूसरी होली उठा दी जाती थी। उपस्थित सभी पुरुष और महिलाओं ने होली गायन में बढ़ चढ़ के भाग लिया। श्री विकास जी, गोपाल जी, नीरद जी, प्रियांशी जी, तरुण जी (तन्नू), प्राचि जी ने अपने सुरीले अंदाज में होली गाकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

चंदन एवं गुलाल का तिलक लगाकर उपस्थित पुरुष तथा महिलाओं का सचिव अभय जी तथा मोनिका जी पत्नी प्रदीप जी 'संजू') द्वारा स्वागत किया गया।

श्री गौरव जी (माखन भोग) द्वारा पिछले वर्ष के कार्यक्रम की तरह इस होली मिलन में भी टेंट की व्यवस्था प्रायोजित की गई। इसी के साथ गौरव जी ने पुत्र रत्न की प्राप्ति के उपलक्ष में कुल्फी भी प्रायोजित की। सभा ने छोटे बच्चों को पिचकारी देकर उनके मन में होली का उल्लास और बढ़ा दिया। सभापति श्री धर्मेंद्र जी 'मुन्ना' ने सफलता पूर्वक अपना कार्यकाल पूरा किया एवं सर्वसम्मति के साथ प्रदीप चतुर्वेदी 'संजू' जी को सभा का नया सभापति चुना गया जिसकी घोषणा एडवोकेट श्री वी एन चतुर्वेदी ने की। श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की अध्यक्षा श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी, पूर्व अध्यक्ष एवं महासभा संरक्षक श्री भरत चतुर्वेदी जी एवम चतुर्वेदी चंद्रिका पत्रिका के संपादक श्री शशांक चतुर्वेदी जी ने सभा के विशेष आग्रह पर पधार कर अपनी गरिमामई उपस्थिति के द्वारा सभा की शोभा और भी बढ़ा दी और सभा द्वारा शॉल, श्रीफल और माला पहना कर इनका स्वागत सभा की ओर से श्रीमती अंजली जी, श्रीमती गोकरण जी, श्री हेमंत जी ने किया। अंत में सभापति जी द्वारा उपस्थित बांधवों का कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया गया।

- अभय चतुर्वेदी, सचिव

नोएडा

दिनांक 17 मार्च 2024 को श्री नलिन जी के निज निवास पर

नोएडा में होली गायन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें महासभा के पूर्व सभापति डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी, महामंत्री श्री मुनींद्र जी (महासभा के महामंत्री) के साथ अन्य लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे। श्री विवेक जी (मुक़्क़ी), श्री लोकेंद्र जी (गाजियाबाद) श्री विपिन पांडे जी, श्रीमती अनुपमा जी, श्रीमती अनीता जी, श्री समीर जी विशेष रूप से उपस्थित थे। इसी के साथ शशांक जी संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका ने भोपाल से आकर इसमें भागीदारी की। होली गायन की स्वरलहरियों के साथ मनीष जी की ढोलक की थाप व मुनीन्द्र जी के मजीरें की स्वरलहरियों साथ माहौल में अलग उत्साह पैदा कर रहे थे। होली गायन के साथ द

नलिन जी अतिथि की अतिथियों के अतिथ्य में भी में भी अपने परिवार का भरपूर सहयोग कर रहे थे। सभी अतिथियों का भरपूर ख्याल रखा जा रहा था।

दिल्ली

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा दिल्ली का वार्षिक होली मिलन कार्यक्रम दिनांक 3 मार्च 2024 को किदवइनगर मार्केट, दिल्ली के बारात घर में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के आरंभ में महासभा के निवर्तमान सभापति एवं संरक्षक डॉक्टर प्रदीप जी एवं दिल्ली शाखा सभा के सभापति श्री महेश जी तथा उपस्थित जन गण ने महाविद्या देवी और चर्चिका देवी के चित्रों को पुष्प अर्पित किए।

सुमंगल दाहिने.....के साथ होली गायन कार्यक्रम का आरंभ कर सुंदर होलियों को गाना प्रारम्भ किया। खाने और टेंट की व्यवस्था माखन भोग कैटरर के गौरव चतुर्वेदी तरसोखर द्वारा की गई। सबने सुरुचिपूर्ण भोजन के लिए अध्यक्ष महेश जी का धन्यवाद किया।

लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी, सचिव
श्री माथुर चतुर्वेदी

लखनऊ

दिनांक 18 फरवरी 2024 को लखनऊ मंडल की मासिक बैठक श्री जयदीप जी के निवास निकट आईटी कालेज पर संपन्न हुई। जिसकी शुरुआत सुबोध जी एवं वेंकटेश जी के मंगलाचरण से हुई। सर्व प्रथम मंत्री नमन द्वारा विगत मीटिंग की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। जिसकी सदन ने सर्वसम्मति से पुष्टि करी। इसके बाद दिलीप सिकंदरपुरिया के प्रस्ताव पर श्रीमती ऊषा जी (भोपाल) को भारी बहुमत से महासभा का सभापति निर्वाचित होने पर सदन ने तालियों की। गड़गड़ाहट के साथ शुभकामनाएं प्रेषित की। इसके उपरांत सौरभ जी फरौली ने श्रीमती ऊषा जी के सफल सामाजिक जीवन के बारे में सदन को जानकारी दी गई। फिर अध्यक्ष अजय जी, मंत्री नमन जी, पुत्तन जी, नवीन जी जहांगीरपुर, उपाध्यक्ष राजीव जी,अन्नू जी आदि के बधाई संदेश देने के साथ सदन ने सर्वसम्मति से महासभा के साथ भरपूर सहयोग करने का प्रस्ताव पारित किया गया। इसके बाद मंत्री के प्रस्ताव पर सदन ने होली बजट की अनुमति प्रदान की। फिर जोरदार होली गायन प्रारंभ हुआ जिसमें वरिष्ठ जन डाक्टर अशोक,सुनील जी पान दरीबा, सुबोध जी की उपस्थिति ने चार-चांद लगा दिए। गायन में प्रमुख रूप से सुबोध जी, नवीन जी,अन्नू जी बालक पार्थ और उसकी बहन इशिका जो भविष्य के सितारे हैं ने सौरभ जी के साथ समां बांधने में सहयोग किया। मीटिंग के अंत में सदन ने श्री जयदीप और उनकी पत्नी श्रीमती गीता को सुंदर व्यवस्था एवं सुमधुर जलपान के लिए धन्यवाद दिया। - **अजय अध्यक्ष**

गुरुग्राम

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा गुरुग्राम द्वारा 17 मार्च 2024 को सामाजिक बंधुओ सहित होली मिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ ।

कार्यक्रम की शुरुआत गुरुग्राम सभा की सदस्यो ने श्री गणेश वंदना उपरांत दीप प्रज्वलन द्वारा की की गई , दीप प्रज्वलन मुख्य अतिथी श्रीमति उषा चतुर्वेदी, विशिष्ठ अतिथी श्री शशांक जी, सम्मानित अतिथी श्री मुनीन्द्र नाथ जी, श्री मुकेश चतुर्वेदी जी, डा. निशीथ जी और श्री अखिलेश चतुर्वेदी जी द्वारा किया गया, उपरांत शाखा सभा अध्यक्ष श्री अखिलेश जी, सचिव श्री अभयराज जी द्वारा मुख्य अतिथी श्रीमती उषा जी चतुर्वेदी - अध्यक्ष श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, सम्मानित अतिथी श्री भरत जी - पूर्व अध्यक्ष एवम संरक्षक महासभा, विशिष्ठ अतिथी श्री शशांक जी - संपादक चतुर्वेदी चंद्रिका, सम्मानित अतिथी श्री मुकेश जी -अध्यक्ष आगरा सभा एवं श्री मुनींद्र नाथ जी एवम डॉक्टर निशीथ जी का श्री फल और रामचरित मानस देकर सम्मान किया गया। नवनिर्वाचित महासभा अध्यक्ष श्रीमती उषा जी को माल्यार्पण कर गुरुग्राम के अन्य बंधुओ द्वारा भी सम्मानित किया गया। तत्पश्चात सभी अतिथीयों ने समाज और सभा के प्रति अपने अपने विचार रखे ।

होली मिलन का कार्यक्रम हो और होली गायन न हो ऐसा तो हो ही नहीं सकता। इसी क्रम में श्री धर्मेश जी, श्री अभय (बिट्टू जी), श्री अखिलेश जी, श्री मनोज जी, श्री मुदित मिश्रा जी, श्री अन्वेष मिश्रा जी, श्रीमती शिप्रा जी, श्रीमती विभा जी, श्रीमती ऋचा जी, श्रीमती अपूर्वा जी, श्रीमती अनुश्री जी और श्रीमती सुरभि जी आदि ने ढोलक और मंजीरों के साथ होली गायन कर अपनी पारम्परिक होलियाँ प्रस्तुत कर सभी बांधवो को बृज की याद दिला दी जिसके कारण हर तरफ माहौल रंगारंग बन गया इसी क्रम में मुख्य अतिथी श्रीमती उषा जी अपने आप को नही रोक पायीं और होली गायन कर शमा बाँध दिया और होली गायन कर सभी का पूर्ण साथ दिया।

होली गायन के समय एक तरफ होली गायन चल रहा था तो दूसरी तरफ गुरुग्राम सभा के सदस्यों ने सभी उपस्थित जनों के साथ फूलो की होली खेली जिसे सभी ने सराहा ।

कार्यक्रम को स्मृतिपूर्ण बनाने हेतु छायांकन का कार्य श्रेयस चतुर्वेदी द्वारा सफलता पूर्वक किया गया ।

होली गायन उपरांत गुरुग्राम शाखा सभा अध्यक्ष श्री अखिलेश जी द्वारा सभी का धन्यवाद देते हुए गुरुग्राम सभा की नव निर्वाचित अध्यक्ष श्रीमती नीतिका चतुर्वेदी जी का स्वागत करते हुए परिचय दिया, श्री माथुर चतुर्वेदी सभा गुरुग्राम की नव निर्वाचित अध्यक्ष श्रीमती नीतिका चतुर्वेदी को वर्तमान अध्यक्ष श्री अखिलेश जी और मुख्य अतिथी श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी ने पुष्प गुच्छ दे कर शुभकामनाएं और हार्दिक बधाई दी। इसी क्रम में उपस्थित सभी सामाजिक सदस्यों ने भी शुभकामनाए प्रेषित की। गुरुग्राम शाखा सभा द्वारा सभी पूर्व अध्यक्षों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए श्रीमती उषा जी की ने सभी सदस्यो को बधाई दी । उषा जी ने आशीर्वाद देते हुए नवनिर्वाचित अध्यक्ष जी

को शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में गुरुग्राम के अलावा दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, फरीदाबाद और आगरा से भी बांधव सम्मिलित हुए थे और अध्यक्ष जी ने गुरुग्राम सभा की तरफ से सभी को धन्यवाद दिया।

सफल होली मिलन कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अखिलेश चतुर्वेदी जी ने और सफल संचालन अभय राज जी ने किया ।

अंत मे सभी बंधुओ द्वारा सुरुचि भोज का ठंडाई और गुजिया के साथ आनंद लिया गया। अधिकतर आगंतुकों का मानना था की इसी प्रकार से और अधिक सामाजिक कार्यक्रमों के आयोजन से सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं और आपस मे परिचय बढ़ता है। सभा ने इस सुझाव को भविष्य में एजेंडे मे ऊपर रखने का निर्णय लिया है जिससे की अधिक से अधिक कार्यक्रम आयोजित हो सकें।

पालागन सहित
अनुराग चतुर्वेदी/अभयराज चतुर्वेदी

भोपाल

10 मार्च 2024 को श्रीमती नीता चतुर्वेदी, भोपाल के घर होली गायन कार्यक्रम हुआ। जिसमें सभी उपस्थित बंधु बांधवों ने ढोलक, मजीरे और झांझ के साथ उत्साहपूर्वक होली गायन में बढ़ चढ़कर भाग लिया। नव निर्वाचित चतुर्वेदी समाज की प्रथम महिला महासभा अध्यक्ष श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी का पुष्प गुच्छों से सम्मान करते हुए बधाई दी गईं और शुभकामनाएं प्रेषित की गई।

समाज समाचार

- चि. गौरांग सुपुत्र श्रीमती रेनू – श्री पंकज पाठक सुपौत्र स्व. शारदा देवी – स्व. रामेश्वर प्रसाद पाठक (कमतरी/चंद्रपुर) का विवाह सौ. गौरी सुपुत्री श्रीमती सीता – श्री धीरेंद्र सुपौत्री रमादेवी – श्री सुखदेव चतुर्वेदी (उचाड़) के साथ दिनाँक 4 फरवरी 2024 को जयपुर में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आपने पत्रिका सहायतार्थ 1100/– रुपये प्रदान किये। R.No.: 2149
- चि. निखिल सुपौत्र स्व. आशा – श्री घनश्यामदास सुपुत्र श्रीमती रीता एवं श्री दीपक चतुर्वेदी तरसोकर/मुंबई का शुभ विवाह सौ. नेहा सुपुत्री श्रीमती निर्मल एवं महेंद्र चतुर्वेदी (डबरा/उचाड़) के साथ दिनांक 6 फरवरी 2024 को संपन्न हुआ। इस अवसर पर पत्रिका सहायतार्थ 1100/– प्रदान किये। साथ ही लड़का–बिटिया को महासभा की आजीवन सदस्यता दिलाई गई।

बिछड़े स्वजन

* अभय कुमार चतुर्वेदी पुत्र स्वर्गीय परमानंद चतुर्वेदी फिरोजाबाद/ फर्रुखाबाद/ एटा का 29 जनवरी 2024 को लंबी बीमारी के बाद एटा में निधन हो गया।
* श्रीमती मालती देवी पत्नी स्व. मिथिलेश चन्द्र चतुर्वेदी (तरसोखर/रिसड़ा) का देहावसान 13/03/24 लगभग 85 वर्ष की आयु में रिसड़ा में हो गया।
* श्री गौतम (तरसोखर/मुंबई) का मुम्बई में स्वर्गवास 13/03/24 हो गया।
* श्री पीयूष चतुर्वेदी पुत्र स्व उपेंद्र नाथ चतुर्वेदी (मैनपुरी) का स्वर्गवास 13/03/24 बीमारी के कारण हो गया।
* श्री सुशील सुपुत्र स्व.अविनाश भाई साहब (चारबाग लखनऊ) का रात में हृदयगति रुकने से दिनाँक 14/03/2024 को स्वर्गवास हो गया।
* प्रिय गार्गी सुपुत्री श्री यतिन चतुर्वेदी भीलवाड़ा का देवलोक गमन हो गया है। भगवान इनकी आत्मा को अपने चरणों में स्थान प्रदान करें।
* न्यायमूर्ति वशिष्ठ चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. प्रताप सिंह जी चतुर्वेदी एडवोकेट फिरोजाबाद /आगरा/प्रयागराज का 26जनवरी 2024 को निधन
* श्रीमती शुभ्रा चतुर्वेदी पत्नी श्री दिलीप पुत्र स्व. सोनी जी), मैनपुरी / ठाणे का स्वर्गवास दिनाँक 21/03/2024 सुबह 4 बजे हो गया है।
* श्रीमती पारुल पत्नी श्री शशांक चौबे (होलीपुरा/नागपुर), का स्वर्गवास, दिनाँक 21 मार्च 2024 देर रात लगभग 3 बजे नागपुर में हो गया है।
* बड़े दुख के साथ सूचित कर रहे हैं कि बंदूक वाले परिवार के श्री भूपेंद्र नाथ चतुर्वेदी (हरदोई / तरसोखर) का स्वर्गवास 21/03/2024 कोहो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

ग्यारहवीं पुण्यतिथि पर
अश्रुपूर्ण स्नेहांजली

: जन्म :
15 अप्रैल 1982
: स्वर्गवास :
11 अप्रैल 2013

सौमित्र चतुर्वेदी (छोटू)

परिवार जिसका मंदिर था, स्नेह जिसकी शक्ति थी।
परिश्रम जिसका कर्तव्य था, परमार्थ जिसकी भक्ति थी।
ऐसी दिव्यात्मा को ईश्वर शान्ति प्रदान करें।

गहन शोकाकुल व मर्माहत

पत्नी	:	अनिंदिता
पिता–माता	:	राजेन्द्रनाथ – मंजू (फतेहगढ़)
बहन–जीजा	:	सौम्या – सौरभ
बाबा	:	रामनाथ जी
चाचा–चाची	:	कमल – रंजू, विनीत
भाई–भाभी	:	शुभांक – अनाहिता, सुभ्रत
भाँजियाँ	:	वामिका, मनिष्का

एवं समस्त ददिहाल – ननिहाल परिवार के सदस्य

(र.क्र. 2153)

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' अप्रैल 2024

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की
प्रथम महिला सभापति बनने पर

श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी

को फरौली समाज की ओर से

बहुत – बहुत बधाई।